# स्वैच्छिक शिक्षक मंच : एक यात्रा का अनुभव (राजस्थान)

अभिषेक सिंह राठौड़



## पृष्ठभूमि और इतिहास

स्वैच्छिक शिक्षक मंच का विकास कुछ संगठनात्मक प्राथमिकताओं, शिक्षक समुदाय के सरोकारों और संयुक्त पहल पर आधारित है। 2009 में हम एक संगठन के रूप में टोंक और सिरोही जिले में कार्य कर रहे थे। उन्हीं दिनों राजस्थान में शिक्षकों के लिए पूरी अकादमिक समर्थन प्रणाली को समाप्त कर दिया गया था जिसमें खण्ड संसाधन केन्द्र और संकुल संसाधन केन्द्र भी निहित थे। ऐसी परिस्थिति में हम लोग शिक्षकों के पेशेवर विकास के वैकल्पिक तरीके खोज रहे थे। हम सोच रहे थे कि ऐसा क्या करें जो वैचारिक रूप से अलग हो, जो मुख्य रूप से शिक्षकों द्वारा संचालित हो, जो यह मानता हो कि शिक्षक वर्ग सोचने–विचारने वाला वर्ग है और जिसमें औपचारिक सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों वाली समस्या न हो। इसके लिए हमने ऐसे शिक्षकों को मंच प्रदान करने का निर्णय लिया जो स्व–आत्मविश्लेषी हों और इस मंच पर वे अपने विचार साझा कर सकें, सवाल पूछ सकें और एक–दूसरे से सीख सकें। मुख्य विचार यह था/है कि शिक्षकों को स्कूल में चलने वाली शिक्षण–अधिगम की प्रक्रिया से सम्बन्धित सभी मुद्दों पर बात करने के लिए स्थान उपलब्ध कराया जाए। इसलिए हमने शिक्षकों के लिए स्वैच्छिक स्थान बनाने का फैसला किया।

मालपुरा (टोंक, राजस्थान) में ऐसे शिक्षकों का एक समूह भी था जिसके कुछ सामान्य सरोकार थे। ये शिक्षक सेवाकालीन कार्यक्रमों से तंग आ चुके थे लेकिन अपने कक्षा सम्बन्धी अनुभवों को बाँटना चाहते थे। हालाँकि ऐसा लग सकता है कि सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली में ऐसे शिक्षकों का मिलना लगभग असम्भव है लेकिन हमें विश्वास है कि हर प्रणाली में कुछ अच्छे व्यक्ति होते हैं। हमने उन शिक्षकों के साथ शिक्षक मंच की यात्रा शुरू कर दी और अब ये उन सातों राज्यों में मौजूद हैं जहाँ हम कार्य कर रहे हैं और हमारे शिक्षक पेशेवर विकास की कुंजी हैं।

## संकल्पना और प्रक्रिया

चूँकि यह साझे सरोकार का विषय था इसलिए कार्यवाही भी संयुक्त रूप से हुई। फाउण्डेशन की टीम ने शिक्षकों के साथ विचार–विमर्श करने में मदद की ताकि एक निश्चित आधार और प्रचालन के सिद्धान्तों तक पहुँचा जा सके और इन्हीं पर हमने इन मंचों की नींव रखी। उस समय तय किए गए आधार और संचालन के सिद्धान्त इस प्रकार हैं :

- शिक्षक मंच की संकल्पना एक स्वयं सहायक समुदाय, एक समूह के रूप में की गई जो अपने व्यावसायिक विकास की जिम्मेदारी खुद लेता है।
- यह एक अनौपचारिक मंच है जहाँ शिक्षक मिल सकते हैं और अपनी दिन–प्रतिदिन की कक्षाओं के अनुभव, समस्याओं, सफलताओं और उपलब्धियों के बारे में बातचीत कर सकते हैं।
- इस मंच की केन्द्रीय धारणा यह है कि यहाँ कोई पूर्ण विशेषज्ञ नहीं है जो समूह को हर बात का समाधान दे सके या उसकी जरूरतों को पूरा कर सके। यहाँ तो हर सदस्य को सामूहिक समाधान प्राप्त करने के लिए एक साथ कार्य करना चाहिए।
- यहाँ जो समस्याएँ उठाई जाती हैं उनकी प्रकृति सैद्धान्तिक या परिकल्पित नहीं होती, ये तो ऐसी प्रबल समस्याएँ हैं जिन्हें हर सदस्य सुलझाना चाहता है ताकि उसकी कक्षा अधिक प्रभावपूर्ण और समावेशी बन जाए।
- शिक्षक मंच एक लोकतांत्रिक मंच है जहाँ विभिन्न प्रतिभागियों के बीच कोई पदानुक्रम नहीं है। सभी मुद्दों पर हर किसी की बराबर की हिस्सेदारी है और वे अपनी सत्ता या पद की बजाय अपने तर्क या विवेक से किसी चर्चा या बातचीत को प्रभावित कर सकते हैं।
- समूह ही इस बात को तय करता है कि कब मिलना

चाहिए, कहाँ मिलना चाहिए, किस विषय पर चर्चा होनी चहिए और मंच को आगे कैसे ले जाना चाहिए। मंच समूह के द्वारा निर्णीत मानदण्डों के आधार पर कार्य करता है।

- समूह में केवल वही शिक्षक होंगे जिन्हें अपनी रुचि के कारण साथ में काम करने की जरूरत महसूस हुई हो, भले यह संख्या कम ही क्यों न हो।
- टी.ए. या डी.ए. के रूप में कोई वित्तीय लाभ नहीं दिया जाएगा, शिक्षक स्वयं के खर्चे पर आएँगे और एक ऐसे स्थान का चुनाव करेंगे जो उनके लिए सुविधाजनक हो और उन्हें आने–जाने में आसानी हो।
- सभी मुद्दों पर चर्चा करने के लिए शायद 2–3 घण्टे काफी न हों। जिन मुद्दों पर और गहराई और विस्तार से चर्चा करनी हो उनके लिए आवासीय शिक्षक मंच की व्यवस्था की जा सकती है।

**शिक्षक समुदाय के साथ मिलकर इन आधारों और सिद्धान्तों को विकसित करने में एक साल लगा और साथ ही शिक्षक मंच भी चलते रहे।**

### यह सक्रिय और सफल क्यों है?

देश में वर्तमान शिक्षा के परिदृश्य में कई बातें इतनी त्रस्त करने वाली, निराशाजनक और अवसादकारी हैं कि इस शिक्षक मंच जैसी कोई भी पहल सन्देहपूर्ण और अविश्सनीय लगती है। आज देश भर में इस मंच के 10000 से भी ज्यादा सदस्य हैं जो इसकी लोकप्रियता और सफलता का द्योतक है। जब विभिन्न मंचों में इन मंचों का जिक्र होता है तो लोगों को यकीन ही नहीं आता और वे अक्सर यह सवाल पूछते हैं कि इसके पीछे शिक्षकों की प्रेरणा क्या है?

**1. कार्य और आदर का प्रतिदान करना** : एक सामाजिक रचना के रूप में पारस्परिकता का मतलब है कि मित्रवत व्यवहार के जवाब में अक्सर लोग, आत्म–हित मॉडल से भी ज्यादा अच्छा और सहकारितापूर्ण व्यवहार करते हैं; इसके विपरीत शत्रुतापूर्ण कार्यवाही के जवाब में वे अक्सर बुरे और क्रूर बन जाते हैं। जब आप देखते हैं कि एक ही शिक्षक समुदाय के लोग अपने सहयोगियों के पेशेवर विकास के लिए कदम बढ़ा रहे हैं तो आपकी सहज प्रवृत्ति यही होती है कि आप भी अपनी ओर से कुछ योगदान करें; और कुछ नहीं तो इस मंच में भाग ही ले लें। हमने देखा है कि जो शिक्षक कक्षा में कुछ अच्छा कार्य करते हैं वे उसके लिए सम्मान चाहते हैं। इन मंचों का मूल तत्व पारस्परिकता और आदर भाव है।



कुछ वर्ष पहले जब ग्रीस और तुर्की में भूकम्प आया तो दोनों देशों के बीच परस्पर स्वैच्छिक सहायता का आदान–प्रदान हुआ। इस स्वैच्छिक सहभागिता ने भावी आपदाओं के सम्बन्ध में इन दोनों देशों के बीच एक सहमति ज्ञापन को प्रेरित किया।

ग्लोबल रिसर्च – स्वयं सेवा और क्षमता विकास (2002)



उदाहरण के लिए एंडीज में mingas orfaenas ऐसे पारम्परिक तरीके हैं जो आमतौर पर अच्छे कार्यों के लिए श्रम साझा करने के लिए हैं। रिकॉर्ड बताते हैं कि इस प्रकार के पारस्परिक श्रम पिछली कई सदियों से चले आ रहे हैं।

ग्लोबल रिसर्च – स्वयं सेवा और क्षमता विकास (2002)

**2. अपने पेशे के लिए एकजुटता दिखाना** : हर समुदाय में अच्छे लोग होते हैं और शिक्षक समुदाय इसका अपवाद नहीं है। कुछ समय पहले मालपुरा में ऐसा ही एक मंच आयोजित किया गया था और यही सवाल शिक्षकों से पूछा गया कि आप किस प्रेरणा से ऐसे समूह शुरू करते हैं? एक शिक्षक ने बड़ा अद्‌भुत जवाब दिया : मेरे यहाँ आने के तीन कारण हैं "विषय के प्रति ईमानदारी, पेशे के प्रति ईमानदारी और देश के प्रति ईमानदारी"।

**3. आपसी सरोकार** : शिक्षकों द्वारा दिखाए गए सरोकारों की बुनियाद पर ही मंच की रचना की गई है और हम भी उनके साथ यही सरोकार साझा करते हैं। ऐसे कई उदाहरण हैं जिनसे यह साबित होता है कि आपसी सरोकारों द्वारा संचालित पहल अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेती हैं।

**4. गर्व, पहचान और छवि** : स्वैच्छिक शिक्षक मंच पर हमारे हाल के शोध के प्रारम्भिक निष्कर्ष इंगित करते हैं कि शिक्षकों का यह मानना है कि इससे उन्हें अपनी खोई हुई पहचान और छवि को पुनः प्राप्त करने में मदद मिल रही है। हमारे शोध में कई शिक्षकों ने यह भी सूचित किया कि ऐसे मंच का हिस्सा बनना शिक्षण समुदाय और जिला प्रशासन में अच्छा माना जाता है।

**अन्ना हजारे आन्दोलन जैसे मुद्दों पर शिक्षकों की चर्चा यह इंगित करती है कि यह समूह बहुत परिपक्व हो चुका है और बड़े सामाजिक मुद्दों की समझ बना चुका है।**

### सीखना/ महत्त्वपूर्ण गुणधर्म

हमारी टीम और शिक्षक लगातार इस बात पर चर्चा/ चिन्तन कर रहे हैं कि वे कौन–सी विशेषताएँ हैं जिनकी वजह से ये मंच फल–फूल रहे हैं और अनवरत आगे बढ़ रहे हैं। आपस में नियमित रूप से पर्याप्त चर्चा के बाद हमने उन कारकों/विशेषताओं की पहचान की है जो इन मंच के पीछे काम कर रही हैं –

**1. प्रतिबद्धता और विश्वास** : हमने अनुभव किया है कि जिन मंचों में ऐसे मूलभूत सदस्य थे जो प्रतिबद्ध थे और सबकी भलाई के लिए सामूहिक कार्यवाही में विश्वास करते थे, वहाँ लोगों की क्षमताओं में स्पष्ट फर्क देखा जा सकता है।

**2. अपनेपन की भावना और पहल** : जो मंच शुरू में फाउण्डेशन और शिक्षकों द्वारा संयुक्त रूप से प्रारम्भ किए गए थे उन्हें अब शिक्षक ही चला रहे हैं। जबकि जिन मंचों को शुरू करने में हमारी महत्त्वपूर्ण भूमिका थी वहाँ यह चीज देखने में नहीं आई। जहाँ–जहाँ हम संयुक्त रूप से स्वत्व की भावना का निर्माण करने में नाकाम रहे वहाँ हम शिक्षकों के साथ चर्चाएँ कायम रखने में भी असफल रहे।

**3. संसाधन जुटाना** : यह कारक मंच की निरन्तरता सुनिश्चित करने में महत्त्वपूर्ण रहा। जिन मंचों में ज्यादा स्थानीय संसाधन (संसाधक, टी.एल.एम., विषय–सामग्री) जुटाए गए वे अधिक नियमित हैं बनिस्पत उनके जिन्होंने अनावश्यक रूप से फाउण्डेशन पर निर्भर रहने की बात सोची।

**4. संचालन की गुणवत्ता** : 2011 में हमें पता लगा कि शिक्षकों की मंचों में उपस्थिति कम होती जा रही है। इसके दो कारण हो सकते हैं – *अ) चर्चाएँ अच्छी तरह से संरचित नहीं थीं और हर मंच की तैयारी भी ठीक नहीं थी। ब) अब शिक्षक चाहते थे कि हम पहले की तुलना में एक स्तर ऊपर उठकर कार्य करें।*

संचालन की गुणवत्ता दो महत्त्वपूर्ण बातों पर निर्भर होती है : मॉड्यूल की तैयारी और गुणवत्ता और संसाधक की गुणवत्ता। हमने देखा कि जब हमने इन दोनों बातों का ध्यान रखा तो यह समस्या जल्द ही हल हो गई। इन मंचों की सफलता के लिए यह बात बहुत महत्त्वपूर्ण है।

**5. आवासीय शिक्षक मंचों/ कार्यशालाओं में मुद्दों की वृद्धि** – वैसे तो मुद्दों पर चर्चा करने के लिए 2–3 घण्टे का समय काफी होता है लेकिन सारे मुद्दे ऐसे नहीं होते जिन पर सीमित समय में चर्चा कर ली जाए। कुछ मुद्दों पर चर्चा करने के लिए अधिक शैक्षिक दृढ़ता और समय की आवश्यकता होती है। इसका ध्यान रखते हुए हमने आवासीय शिक्षक मंच की संकल्पना की अन्यथा इस तरह के मुद्दों पर कार्यशालाओं में विचार–विमर्श किया जाता है।



उनियारा ब्लॉक (टोंक, राजस्थान) के शिक्षक अक्सर एक–दूसरे की कक्षाओं का अवलोकन करते हैं और उन पर विचार–विमर्श करते हैं। हम चाहते हैं शिक्षक इस तरह के प्रगतिशील विचारों को सामने रखें और उन पर कायम रहें।

### अभी तो मीलों दूर जाना है...

जिस तरह से यह पूरा विचार उभरकर सामने आया वह बहुत रोमांचक और चुनौतीपूर्ण तो था लेकिन यथार्थ के धरातल पर यह सफल भी हुआ। वर्तमान में स्वैच्छिक शिक्षक मंच जिले में शिक्षकों के पेशेवर विकास के लिए हमारी रणनीति का अभिन्न अंग हैं। भविष्य में हमें इन सवालों के जवाब ढूँढ़ने हैं कि इन्हीं विचारों के साथ हम अधिक शिक्षकों तक कैसे पहुँचें, समूह की विविध आवश्यकताओं को कैसे पूरा करें और वैसे तो कई शिक्षक अपनी कक्षा में नए–नए प्रयोग करते हैं लेकिन हम यह कैसे सुनिश्चित करें कि सभी शिक्षक अपने स्कूल में शिक्षण–अधिगम के रचनात्मक तरीकों का प्रयोग कर रहे हैं। हमें स्वैच्छिक शिक्षक मंच की अवधारणा में पूरा विश्वास है और हम यह भी मानते हैं कि यह शिक्षक पेशेवर विकास को आगे बढ़ाने के एक अच्छे तरीके के रूप में उभरेगा। हमारे पास इस विश्वास के लिए अच्छे कारण हैं।

**अभिषेक सिंह राठौर** 2006 से अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन के साथ जुड़े हुए हैं और उन्होंने कम्प्यूटर एडेड लर्निंग, वर्कबुक विकास, शोध, बड़े पैमाने पर शिक्षार्थियों का आकलन और शिक्षकों, प्रधान शिक्षकों तथा शिक्षा पदाधिकारियों के पेशवर विकास के क्षेत्र में योगदान दिया है। उन्होंने टोंक, राजस्थान में फाउण्डेशन के जिला संस्थान और अज़ीम प्रेमजी स्कूल का विकास और नेतृत्व किया है। सम्प्रति वे राज्य संस्थान, राजस्थान, अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन का नेतृत्व कर रहे हैं। उनसे abhishek@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : नलिनी रावल